www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालकों का भावनात्मक विकास

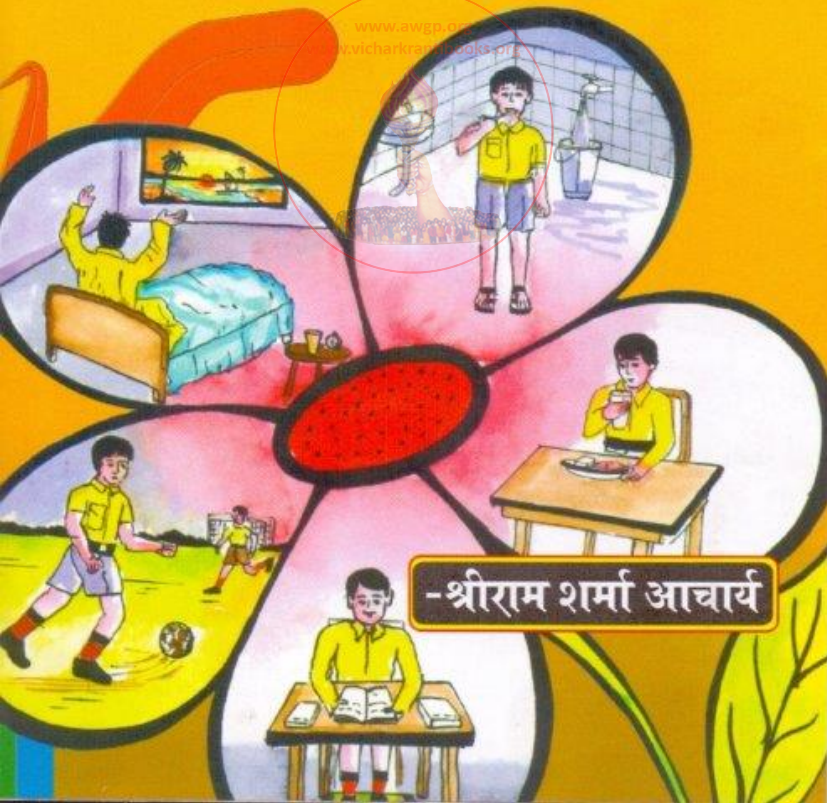

-श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

॥ वंदे वेदमातरम् ॥

बालकों का भावनात्मक विकास

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य : ६.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार के बड़े लोग छोटों के सामने अपना आदर्श रखें, ताकि वे उनका अनुकरण कर सकें। दुष्प्रवृत्तियाँ तो कहीं से भी दौड़ती चली आती हैं, पर सत्प्रवृत्तियों से पारिवारिक सदस्यों को प्रभावित करना हो, तो उसके लिए बड़ों को ही अपना उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। वास्तविक शिक्षा इसी प्रकार दी जाती है। प्रभाव उपदेशों का नहीं, सामने प्रस्तुत होते रहने वाले आचरण का पड़ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बालकों का भावनात्मक विकास

कल का नागरिक बनाना पड़ेगा

यह ठीक है कि मनुष्य सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। मनुष्य जैसी बौद्धिक क्षमता किसी भी जीव–जंतु, पशु–पक्षी और कीट–पतंगे ने नहीं पाई। अपनी बौद्धिक शक्ति के द्वारा वह भू–तल ही नहीं अंतरिक्ष का भी समुद्र–मंथन कर सकता है, किंतु वही मनुष्य जब जन्म लेता है, तो उसकी बौद्धिक स्थिति ठीक इस कथन के विपरीत होती है। गाय का बछड़ा जन्म लेने के बाद चार मिनट में ही चलने लगता है और माँ का दूध ढूँढ़कर पीने लगता है। किसी बंदरिया के बच्चे का न तो जात–कर्म करना पड़ता है, न विद्यारंभ संस्कार। प्राकृतिक प्रेरणा से वह पेड़ों पर चढ़ने, उछलने–कूदने और तैरने तक की सारी क्रिया और विद्याएँ आप सीख लेता है। बिल्ली का बच्चा शिकार की खोज स्वयं करता है, उसे निशानेबाजी का प्रशिक्षण नहीं लेना पड़ता है। जंगल में रीछ, भालू, बाघ, शेर, हाथी और भेड़ियों को न तो वर की खोज करनी पड़ती है, न दहेज और भाँवरों के रीति–रिवाज, तो भी वे प्रगाढ़ दांपत्य–सूत्र में आप बँध जाते और उनका निष्ठापूर्वक पालन अंत तक करते रहते हैं। यह सब प्रकृति की प्रेरणा से होता रहता है, लेकिन इंसान का बच्चा इस दृष्टि से कीट–पतंगों से भी गया–गुजरा है। भ्रूण से विकसित होते ही जल की मछली अपना भोजन आप ढूँढ़ लेती है। कुत्ते अपना ठिकाना आप जमा लेते हैं, किंतु अभागे इंसान के बच्चे में इतनी भी बुद्धि नहीं होती कि वह अपने पास लेटी हुई माँ के स्तन को ढूँढ़ ले और कम से कम अपनी क्षुधा तो तृप्त कर ले। आदमी का बच्चा केवल रोना जानता है। इसके अतिरिक्त न तो वह अपने आप उठ–बैठ सकता है न चल–फिर सकता है। बोली–भाषा यदि उसे सिखाई न जाए, तो वह शरीर की प्रारंभिक आवश्यकता आहार भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वयं नहीं ढूँढ़ सकता। उसे तो जैसा सिखाया, समझाया और बताया जाता है, वैसा ही बन जाता है। बच्चा उस गीली मिट्टी की तरह है, जिसे चाहे जिस साँचे में ढालकर, चाहे जैसी आकृति प्रदान कर दी जाए।

कुछ वर्ष पूर्व लखनऊ अस्पताल में १४ वर्षीय भेड़िया बालक रामू का निधन हुआ। लोगों ने देखा कि बाल्यावस्था में एक भेड़िये के संस्कारों में ढाल दिए जाने वाले बालक को डाक्टर और मनोवैज्ञानिक चिकित्सक केवल थोड़ा हँसना सिखा सके। दुनियाँ भर के विशेषज्ञ नाकामयाब रहे और रामू के उन संस्कारों को बदला नहीं जा सका, जो उसकी छोटी अवस्था में डाल दिए गए थे।

तात्पर्य यह है कि बच्चा आज जिस स्थिति में है, उसमें थोड़ा बहुत हाथ भले ही पूर्व जन्मों के संस्कारों का हो, अधिकांश इस जीवन में उस पर माता–पिता, परिवार और समाज द्वारा डाला गया प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रभाव ही होता है। आज के बच्चे चाहे वह अपराधी मनोवृत्ति के हों, हीन मनोबल, आलसी, उद्विग्न, उच्छृंखल या उद्दंड जो कुछ भी हैं, वह उनके माता–पिता की ही देन हैं। हमारी हर क्रिया की छाप बालक का निर्माण करती है, यदि उन्हें प्रयत्नपूर्वक नहीं सिखाते और निर्मित करते, तो अपनी अस्त–व्यस्त क्रिया ही उनका अस्त–व्यस्त निर्माण करती हैं, इसके लिए बच्चों को दोष नहीं दिया जा सकता। बच्चे आज की स्थिति में अपने आप नहीं ढल गए होते, या तो उन्हें प्रयत्नपूर्वक ढाला गया होता है अथवा अपनी कमजोरियों को मिलाकर उन्हें पाला गया होता है।

उपेक्षा और उदासीनता के द्वारा जिस प्रकार बच्चों को क्रूर और निकम्मा किया जा सकता है, उसी प्रयत्न से भावनापूर्वक उन्हें तेजस्वी और मनस्वी भी बनाया जा सकता है। प्राचीनकाल में माता, पिता, परिवार और बंधुजन अपने आचरण और संस्कारों द्वारा बच्चों के मनोबल, चरित्र, स्वभाव और आत्मबल को ऊँचा उठाया करते थे। उनसे आंतरिक प्यार भी करते थे, किंतु तप, तितीक्षा, साधना और योगाभ्यास द्वारा उनके शरीर, मन और आत्मा को बलवान भी बनाया करते थे। तब इस देश में मेधावी, सत्यनिष्ठ, उदात्त चरित्र वाले नर–रत्न पैदा हुआ करते थे और अपनी यश गाथाओं से संपूर्ण महिमंडल को प्रभावित रखा करते थे। दुर्भाग्य से अब देश में वह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वातावरण नहीं रहा, इसलिए आज हमारी संतति भी निस्तेज और खोखली होती चली जा रही है। आज जैसी ढीठ और उद्दंड संतानें पहले कभी रही होंगी, तो वह असुरों के यहाँ भले ही रही हों, किसी कुलीन हिंदू परिवार में वैसी आत्माएँ देर तक अस्तित्व बनाए नहीं रह सकती थी।

इतिहास पुनरावृत्ति चाहता है। भारतवर्ष अपने नागरिकों से अपना गौरव माँगता है, तो फिर से हमें देश में दिव्यता और ज्ञान की तेजस्विता का विकास करना होगा और उसका प्रारंभ भावी संतति से होगा। हम जैसे, जो कुछ हैं, बने रहें, पर भावी संतति के नव निर्माण का कर्त्तव्य तो हमें पूरा करना ही होगा।

बच्चों को प्रयत्नपूर्वक बनाना पड़ता है

हर बच्चा आगे चलकर अपने जीवन में बड़ी से बड़ी सफलता प्राप्त कर सकता है, यदि उसके अभिभावक उसके समुचित विकास में पूरा–पूरा सहयोग देने का अपना दायित्व ठीक तरह से निर्वाह करें। कोई भी बच्चा न तो जन्मजात महापुरुष होता है और न असफल व्यक्तित्व। यह दोनों स्थितियाँ आगे चलकर उस नींव के आधार पर बनती हैं, जो बाल्यकाल में उनके माता–पिता द्वारा रखी जाती हैं।

बच्चों के समुचित जीवन–विकास में माता–पिता द्वारा उपेक्षा बरती जाने का एक कारण तो यह होता है कि बच्चों का विकास किस प्रकार किया जाए ? इस ज्ञान से वे सर्वथा वंचित होते हैं। दूसरा कारण यह होता है कि माता–पिता अपने बालक को अत्यंत प्यार करने के कारण उसे संसार का सबसे प्रवीण बालक समझते हैं और निराधार ही अपनी सद्भावना के कारण यह धारणा बना लेते हैं कि वह आगे चलकर बहुत बड़ा आदमी बनेगा। उन्हें अपने मोह के कारण उसकी स्वाभाविक तथा साधारण बाल–लीलाओं में महापुरुष के लक्षण दृष्टिगोचर होते रहते हैं। इस विषय में एक मोहमयी माता का बड़ा दिलचस्प उदाहरण है, जिसने अपना अनुभव बतलाते हुए स्वयं कहा है–

''जब मैं पहली बार अपनी प्यारी पुत्री को पहली कक्षा में भरती कराने ले गई, तो मेरे हृदय में यह विश्वास था कि वहाँ जब मेरी पाँच वर्ष की लड़की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपनी चतुराई भरी बातें करेंगी, तो उसकी कुशाग्र बुद्धि पर सारी अध्यापिकाएँ आश्चर्यचकित होकर उसकी प्रशंसा करने लगेंगी और ऐसी होनहार बेटी पाने पर मुझे बधाई देने लगेंगी, किंतु वहाँ पहुँचकर मुझे अपने विश्वास के थोथेपन पर बड़ी लज्जा लगी। मुझे यह देखकर कुछ कम आश्चर्य भी नहीं हुआ कि वहाँ जितनी माताएँ अपनी बच्चियों को भरती कराने आई थीं, उन सबकी धारणा अपनी बेटियों के प्रति मेरी ही तरह थी।''

उस माँ का यह अनुभव प्रकट करता है कि सभी माता–पिता अपने बच्चे की बाल–लीलाएँ देखकर यही समझते हैं कि यह संसार का सबसे बुद्धिमान बालक है और आगे चलकर निश्चय ही बड़ा आदमी बनेगा। अपनी इस अति धारणा के कारण ही वे भगवान तथा नियति के भरोसे उसे अपने आप विकसित होने के लिए छोड़ देते हैं और किसी योजना अथवा मानचित्र के आधार पर उसे विकसित होने में सहायता नहीं करते, यह भूल है। न तो कोई बच्चा जन्मजात असफल व्यक्तित्व होता है और न विशेष पुरुष। वह इतना संवेदनशील अवश्य होता है कि अपने अभिभावकों की हर क्रिया और चेष्टा को ध्यानपूर्वक देखता और स्वयं भी उनका अनुकरण करने का प्रयत्न करता है। वह आगे चलकर बिल्कुल वैसा ही बन जाता है, जैसी कि उसके माता–पिता द्वारा उसके जीवन की नींव रखी जाती है। सावधान माता–पिता अपने बुद्धिहीन तथा बुद्धू दिखलाई देने वाले बच्चों को प्रयत्नपूर्वक ऐसी जीवन रेखा पर डाल देते हैं कि दिन–दिन उन्नति करते जाते हैं और असावधान माता–पिता अपने अति विश्वास के कारण कुशाग्र–बुद्धि तथा होनहार बच्चों की उपेक्षा करके कहीं का नहीं रहने देते। बच्चों को ऊँचा उठाने अथवा यथास्थान पड़े–पड़े सड़ा देने में माता–पिता के प्रयत्न तथा प्रमाद का बहुत बड़ा महत्त्व है। यह सत्य किसी भी अभिभावक को किसी दशा में भी नहीं भूलना चाहिए। बच्चों को जन्म दिया है, तो अपना कर्त्तव्य, अपना उत्तरदायित्व तथा अपने महत्त्व का निर्वाह कीजिए, बच्चों को महापुरुष बनाने में मदद करिए। आपका गौरव बढ़ेगा, कुल का नाम होगा और देश व समाज का हित होगा। हर बच्चा एक महापुरुष बन सकता है, उसके भीतर ऐसी शक्तियाँ छिपी रहती है, उनका जागरण तथा नियोजन ठीक प्रकार से हो जाना चाहिए और यह दायित्व आप सब अभिभावकों का है। संसार में एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं ऐसे हजारों महापुरुषों के उदाहरण मिलते हैं, जो शुरू में बहुत ही बुद्धू लगते थे, किंतु प्रोत्साहन तथा वातावरण पाकर वे संसार के जाज्ज्वल्यमान नक्षत्र बन गए।

डार्विन शुरू में बड़ा मंदबुद्धि बालक था। उसका पढ़ने में जरा भी मन नहीं लगता था। स्कूल में न चल सकने के कारण उसे वहाँ से निकाल दिया गया था। उसने जब स्कूल छोड़ा था, उस समय तक वह अपनी भाषा भी भली–भाँति नहीं सीख सका था। लोग उसके पिता से शिकायत किया करते थे कि आपके घर में एक अच्छा बुद्धू पैदा हुआ है। आप उसे पढ़ाना चाहते हैं और इस बात की आकांक्षा करते हैं कि वह जीवन में योग्य व्यक्ति बने, किंतु यह आपका सारा प्रयास व्यर्थ कर देगा। साथी डार्विन से व्यंग्य करते हुए कहा करते थे कि तुम कहीं जंगल में जाकर या तो कुत्ते–बिल्ली पकड़ो और बेचो या किसी तालाब–झील अथवा समुद्र के किनारे जाकर मछली मारो, पढ़ाई–लिखाई तुम्हारे वश की बात नहीं है। इतिहास बतलाता है कि डार्विन शुरू में ऐसा ही मंदबुद्धि बालक था, किंतु उनके पिता ने प्रयास न छोड़ा और न वे निराश ही हुए, वे बराबर उसको उपदेश करते और होनहार होने की शिक्षा दिया करते थे। वे दुर्ग बनकर अपने बच्चे को दुर्गुणों तथा दुर्व्यसनों से बचाए रहते थे और खुद अच्छे–अच्छे महापुरुषों की कहानियाँ सुनाया करते थे। वे अपने साथ उसे काम में लगाए रहते और सदा ऐसा व्यवहार करते मानो वह उनका बहुत होनहार सपूत हो। पिता के प्रयत्नों का फलने का समय आया और डार्विन की गुप्त शक्तियाँ प्रबुद्ध हुईं और वह पिता के परिश्रम, आत्मविश्वास, उत्साह तथा एकाग्रता के गुणों के आधार पर संसार का सर्वमान्य दार्शनिक, अन्वेषक तथा समाजशास्त्री बना। उसका विकासवाद का सिद्धांत संसार में आज भी मान्य है।

जहाँ बहुत से अभिभावक अपने बालक की चपलता तथा वाचालता देखकर उसे होनहार मानकर निश्चिंत हो बैठते हैं और विश्वास बना लेते हैं कि उसे अपने आप बढ़ते चलने देना चाहिए। यह नियति है कि वह आगे चलकर एक बड़ा आदमी बनेगा, वहाँ बहुत से अभिभावक अपने बच्चों की शरारत तथा नटखटपन देखकर निराश हो बैठते हैं। नेपोलियन अपने बचपन में बड़ा ही नटखट और शरारती बालक था। लड़ना–झगड़ना, मार–

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पीट करना, शिकार खेलना, पहाड़ों पर चढ़ना और शरारती लड़कों का नेतृत्व करना उसे बहुत पसंद था। पढ़ने–लिखने का यह हाल कि बी. ए. की परीक्षा में अपने ४१ साथियों के साथ बैठा। पास तो हो गया, किंतु रहा सबसे फिसड्डी, आखिरी नंबर पर पास हुआ। उसके उत्साही माता–पिता निराश न हुए, उसके नटखटपन अथवा शरारत को नियंत्रित करने और उसे स्फूर्ति निर्माण की दिशा में लगाने का प्रयत्न करते रहे। उस प्रयत्न से नेपोलियन ने अनुशासन का महत्त्व तथा शक्तियों को कार्य की ओर लगाना सीखा, जिसका फल यह हुआ कि वह संसार का एक महानतम सेनापति तथा यूरोप का विश्व विख्यात विजेता बना।

इसके विपरीत उसके वे साथी जो बी. ए. में पहले और दूसरे नंबर पर पास हुए थे, क्या बने, यह कोई नहीं जानता। निश्चय ही वे नेपोलियन से अधिक मेधावी तथा परिश्रमी रहे होंगे, किंतु वे विस्मृति के गहन अंधकार में विलीन हो गए। संदेह किया जा सकता है कि उनके माता–पिता ने उन्हें महज मेधावी तथा होनहार समझकर उनके निर्माण में सहयोग नहीं किया होगा, जिनके विषय में न्याय तो यह कहता है कि उन्हें नेपोलियन से अधिक यशस्वी होना चाहिए था, किंतु वे संसार के किसी अज्ञात कोने में साधारण मौत मरकर चले गए।

सर आइजक न्यूटन, जिसे ग्रह–नक्षत्रों की गति तथा पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का आदि आविष्कर्त्ता माना जाता है और जिसकी देन आज तक वैज्ञानिकों व नक्षत्रविदों के लिए प्रकाश–स्तंभ बनी हुई है, बाल्यकाल में बड़ा मंद बुद्धि बालक समझा जाता था। पढ़ने–लिखने में इतना कमजोर कि असाध्य समझकर सबसे पीछे बिठलाया जाता था। उसे खिलौने बनाने का बड़ा शौक था, वह खिलौने बनाकर स्कूल ले जाता और वहाँ भी उनमें कुछ सुधार करता रहता था। साथी उसकी कृतियों पर हँसते थे और अध्यापक नाराज होते थे, किंतु उसके माता–पिता ने उसकी इस वृत्ति को कभी नहीं टोका और न हतोत्साह ही किया। वह घर पर तन्मयता से जिस निर्माण में लगता था, उसमें लगा रहने दिया जाता था। ध्यान केवल यह रखा जाता था कि वह अपनी कला में विकास करता है अथवा यों ही समय नष्ट किया करता है। माता–पिता की इस बुद्धिमानी का फल यह हुआ कि उसी खिलौने बनाने वाले बालक न्यूटन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ने हवा चक्की और पानी की घड़ी का आविष्कार किया, जिनका विकसित रूप हम आज बड़े–बड़े फ्लोर मिल और तरह–तरह की सुंदर घड़ियों के रूप में देख रहे हैं। वही रोगी और मंद–बुद्धि बालक न्यूटन माता–पिता की सावधानी के कारण महान् गणितज्ञ तथा यथार्थ विज्ञानवेत्ता हुआ।

महात्मा गाँधी को दुनियाँ जानती है, बहुत ही साधारण बुद्धि के व्यक्ति रहे थे। उन्होंने खुद लिखा है कि स्कूल–कालेज में ज्यादा कुछ कभी भी न बन सके किंतु माता–पिता की शिक्षा, नियंत्रण तथा संस्कारों के साथ उनकी दी गई सेवाओं ने उन्हें विश्ववंद्य बापू बना दिया। उनकी गणना संसार के महानतम महापुरुषों में पहले नंबर पर होती है। बाल्यकाल के कुशाग्र बुद्धि तथा मेधावी बालक महापुरुष बन ही जाएँगे और साधारण प्रतिभा वाले, बुद्धू समझे जाने वाले बालक शून्य ही रह जाएँगे, ऐसा नहीं कहा जा सकता। जिनको माता–पिता का उचित सहयोग और घर–बाहर का उपयुक्त वातावरण नहीं मिलता, वे प्रखर प्रतिभा के धनी बालक पीछे पड़े रह जाते हैं और जिनको इस प्रकार सहयोग मिल जाता है, वे प्रतिभा रहित बच्चे आगे निकल जाते हैं। इतना ही क्यों, प्रतिभावान् बालक जिन्हें समुचित शिक्षा–दीक्षा अथवा देखभाल नहीं मिलती, बहुधा गलत रास्तों पर चले जाते हैं और तब उनकी प्रतिभा समाज के लिए बड़ी भयानक सिद्ध होती है। संसार के बर्बर विजेता, क्रूर शासक तथा नामी डाकू ऐसे ही प्रतिभाशाली बालक रहे होंगे, जो अपने अभिभावकों की उपेक्षा, असावधानी के कारण गलत मार्ग पर चलकर समाज के शत्रु सिद्ध हुए हैं। बालकों के उचित–अनुचित निर्माण में माता–पिता के उत्तरदायित्व का बहुत महत्त्व है, वे चाहें तो अपनी सावधानी से उन्हें शिखरस्थ कर सकते हैं और चाहें तो उपेक्षा तथा अनुत्तरदायित्व से उन्हें पाताल में गिरा सकते हैं। माता–पिता अपने बच्चे के विधाता माने गए हैं, उन्हें अपना यह उत्तरदायित्व कदापि विस्मरण नहीं करना चाहिए।

यदि महापुरुषों की बातों को छोड़ भी दिया जाए, तो भी किसी मनुष्य का सभ्य–सुशील, शालीन–सज्जन तथा सामाजिक होना ही क्या कम है। यदि ऐसा होकर वह बहुत यशस्वी न भी हो पाएगा, तो भी वह जीवन में जिस सुख, शांति तथा संतोष का अनुभव करेगा, वह क्या किसी यश से कम है। बच्चे का एक सभ्य नागरिक बनना अथवा एक असामाजिक जीव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनकर जीना भी माता–पिता के प्रयत्न पर निर्भर करता है। अभिभावक यदि बच्चों को बाल्यकाल से ही उनकी सहज सामाजिक प्रवृत्ति को परिमार्जित करते हुए थोड़ा–थोड़ा प्रशिक्षित करते रहें, तो कोई कारण नहीं कि वे इतिहास पुरुष न भी बन सकें तो भी उनकी तरह पूर्ण नागरिक तो बन ही सकते हैं।

बच्चे आपके सच्चे मित्र

सच्चा, सरल और निष्कपट मित्र ! ऐसे मित्र की तलाश संसार में किसे न होगी, जिससे अपनी प्रत्येक गुप्त से गुप्त बात प्रकट कर सकें, तो भी ऐसी आशंका न रहे कि वह बात कहीं अन्यत्र फैल जाएगी। जो इतना सरल हो कि अपनी प्रत्येक त्रुटि को उदारतापूर्वक क्षमा कर सके, जो हर कार्य में सच्चा सहयोगी सिद्ध हो सके। अभिन्न हृदय, अभिन्न आत्मा, न कोई छल, न कपट। ऐसा मिल जाए, तो पूर्वजन्म का कोई पुण्य, कोई सुकृत्य ही समझना चाहिए, पर ऐसी मित्रता इस जगत् में अपवाद ही हो सकती है। प्रायः मित्रता किसी लाभ या स्वार्थ की दृष्टि से कायम होती है और जब परिस्थितियों में ढीलापन आने लगता है, तो आत्मीयता के बंधन भी समाप्त होने लगते हैं। अनेक बार यह संबंध इतने कटु हो जाते हैं कि जिगरी दोस्त भी जानी दुश्मन बन जाते हैं, मित्रता शत्रुता में बदल जाती है।

हमारी दृष्टि में अपने बच्चों की मित्रता निश्चित ही अधिक उपयोगी हो सकती है। मित्र में जो गुण होने चाहिए, वे बच्चों में मौलिक रूप में देखे जा सकते हैं। बच्चों के साथ आत्मीयता का विस्तार किया जाए, तो वे सबसे प्रिय, सगे, स्नेही और सहयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

विश्व कवि रवींद्रनाथ टैगोर कहा करते थे–''परमात्मा की पवित्रता और निश्छलता यदि कहीं है, तो उसे मैंने बच्चों में पाया। बालकों को मैं अपने जीवन का प्रेरणा स्रोत मानता हूँ।'' पं० जवाहरलाल जी की बालकों के साथ घनिष्ठता विश्व–विख्यात है। उन्होंने एक बार कहा था–''मैं इस संसार में अपने मित्रों के कारण बहुत सुखी हूँ। यह जो भोले–भाले बच्चे हैं, यही हमारे प्रिय सखा हैं।''

पारिवारिक सौमनस्य और बालकों के जीवन निर्माण की दृष्टि से भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने बच्चों की मैत्री बहुमूल्य होती है, इसके लिए बालक सदैव इच्छुक दिखाई देते हैं, किंतु घरों में बच्चों को अल्पबुद्धि समझकर प्रायः उनकी उपेक्षा की जाती है। उनकी सूझबूझ कई बार इतनी महत्त्वपूर्ण होती है कि वयस्कों को आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। सच तो यह है कि बालकों में सही निर्णय की क्षमता दूसरों की अपेक्षा कहीं अधिक होती है, किंतु उन्हें ऐसा करने के लिए अवसर नहीं दिया जाता, यह दुःख की बात है।

घर का बजट या किसी काम–काज की योजना बनाते समय लोग बच्चों को यह कहकर भगा देते हैं कि जाओ खेलो, यहाँ तुम्हारे मतलब की कोई बात नहीं, पर ऐसा करते हुए अभिभावक यह भूल जाते हैं कि ऐसा करने से न केवल बालक की रचनात्मक बुद्धि को आघात पहुँचता है, वरन् वे एक अति महत्त्वपूर्ण सहयोग से वंचित रह जाते हैं। बजट बनाते समय बच्चे कई इतनी उपयोगी बातें बता देते हैं कि जहाँ हमारी कल्पना भी नहीं पहुँचती। यह तो साधारण बात हुई। बालकों से बड़े व्यक्तियों को कई बार ऐसे अनेक सुझाव मिले।

जार्ज बर्नार्डशा के एक नाटक में किसी पात्र के मुँह से ऐसी एक बात कहलाई गई थी, जो उसे नहीं कहनी चाहिए थी। उसे बालक ने ठीक किया था। 'पिताजी ! मनुष्य को उत्सवों में नहीं शामिल होना चाहिए।' यह उपदेश बालक नेपोलियन ने अपने पिता को दिया था। सुभाषचंद्र बोस अपने घर में नजरबंद थे, तो वहाँ से मौलवी वेश में निकल जाने की योजना उनकी छोटी भतीजी ने ही बनाई थी। बच्चों में दरअसल असाधारण सूझबूझ होती है, उसे यदि ठुकराया न जाए, तो वे ऐसी सुघड़ सलाह देते हैं, जैसी कोई मित्र भी नहीं दे सकता।

बच्चों में पूर्वजन्म की प्रतिभा छिपी होती है। किन्हीं–किन्हीं में तो यह मात्रा वयस्कों से भी अधिक होती है। सुयोग्य–सहयोग के लिए हर माता–पिता को उस प्रतिभा से काम भी लेना चाहिए और उसको विकसित करने का प्रयत्न भी करना चाहिए।

मित्रों से एक अपेक्षा यह की जाती है कि वे सुख–दुःख में सच्चे आत्मीय की तरह हमारे साथ रहें। हम नहीं कह सकते कि इस नियम का व्यवहार में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कितना पालन होता है, पर बच्चों से अधिक संवेदनशीलता बड़ों में नहीं होती। माता–पिता को दुःखी देखकर बच्चों के चेहरे पहले मुरझा जाते हैं। प्रसन्नता के समय घर को उल्लास से भर देते हैं। इन दोनों समय में बच्चों की आत्मीयता प्राप्त कर सच्चे आत्म–संतोष का अनुभव किया जा सकता है। दुःख के समय बालकों के सान्निध्य से दुःख कटता है, सुख में उन पर हल्का उत्तरदायित्व छोड़ने से उनका स्वाभिमान, आत्मीयता की भावना और उदारता की वृत्ति का परिष्कार होता है। इन दोनों अवसरों पर अपनी मानसिक स्थिति को बच्चों के सामने खुली हुई रखनी चाहिए।

कभी–कभी मित्रों के गुण–सौंदर्य बहुत प्रभावित करते हैं। किसी में आत्मीयता अधिक होती है, किसी में मनोविनोद होता है, कोई प्राणवान होते हैं, तो कोई कर्त्तव्य पालन और व्यवहार में श्रेष्ठ होते हैं। बच्चों में इस प्रकार के अनेक सद्गुणों और सद्भावों का सम्मिलित एकीकरण देखा जा सकता है, पर उसे पुत्र होने की अधिकार भावना से न देखकर मैत्रीपूर्ण भावनाओं से देखिए, एक–दूसरे पर समान अधिकार का आश्वासन देकर ही एक–दूसरे के गुणों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सरलता बालकों का स्वाभाविक गुण है। यदि उनके साथ कोई जोर–जबरदस्ती न की जाए या अनावश्यक दबाव न डाला जाए, तो उनमें प्रतिक्षण सरलता के भाव देखे जा सकते हैं। प्रतिदिन ऐसे मनमोहक दृश्य उपस्थित करते रहते हैं। कभी बच्चा कपड़ों और देह में मिट्टी लपेटकर आपके समक्ष आ खड़ा होगा, ठीक बाल–शिव की तरह उसे देखकर आप मुस्कराए बिना नहीं रहेंगे। उसे कपड़ा पहनने के लिए कहेंगे, तो उल्टी कमीज पहनकर आ जाएगा, अपनी किताबों को सारे कमरे में बिखेर देगा, उन्हें इस तरह खोलेगा मानों किसी विशेष संदर्भ की तलाश हो। बड़ों को हाथ–मुँह धोता देखकर यह भी वैसा ही अनुकरण करता है, पर हाथ में लिया हुआ पानी कभी एक गाल के लिए ही पर्याप्त होगा। कभी मुँह में उँगली डालकर दाँत साफ करने की क्रिया करेगा, यह सब वह अपनी बाल सरलता से करता है। गलत–सही का उसे जरा भी अंदाज नहीं होता। आपको भी उसकी इन क्रियाओं से मनोविनोद करना चाहिए, पर यदि उसे इन कौतुकों के फलस्वरूप अपनी डाँट–डपट, मार–झिड़क मिली, तो कुछ ही दिनों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसकी सारी सरलता कठोरता में बदलने लगेगी। यदि आप इन आदतों से किसी को सुधारना चाहते हैं, तो उसका सही नमूना बार–बार उसके आगे प्रदर्शित कीजिए। बच्चा अपने आप उसका अनुसरण कर लेगा। समझाएँ भी तो हँसते हुए, कुछ कहें भी तो आत्मीयता के साथ। 'नहीं मुन्ने ! ऐसे नहीं, कंघा यों पकड़ना चाहिए और ऐसे बाल ठीक करने चाहिए।' इस प्रकार कहते हुए आप उसे बात समझाइए। चिल्लाकर–चौंकाकर आप कोई बात कहेंगे, तो बच्चा डर जाएगा और आपके प्रति उसकी भावनाओं में कठोरता आने लगेगी। यह दबाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुटिल परिणाम उपस्थित करने वाला होता है।

बच्चे बड़े निष्कपट होते हैं, पर गलत उदाहरण देकर ही उनकी निष्कपटता नष्ट कर दी जाती है। घर में कुछ आता है, आप उसे छिपाते हैं, झूठ बोलते हैं, एक–सा व्यवहार नहीं करते। इन तमाम बातों को आधार मानकर बच्चा भी उन्हें आवश्यक समझने लगता है और खुद भी उसी तरह का छलपूर्ण व्यवहार सीखने लगता है। कोई वस्तु घर में आए, तो भले ही वह बच्चे के उपयोग की वस्तु न हो, पर उसे दिखाइए अवश्य। सो रहा हो या विद्यालय गया हो, तो उसके घर आते ही आप सारी वस्तुओं को बाहर निकालिए और उसे बताइए कि यह वस्तु अमुक के लिए है, यह इतने पैसे में आई, वहाँ से खरीदी गई। उसे यथासंभव सारी बातें बता दीजिए, ताकि उसके मन में किसी भी प्रकार की गलतफहमी पैदा न हो।

आपके बच्चों की सारी जिम्मेदारियाँ आप पर हैं, उनको पूरा करने में निःसंदेह कठिनाइयाँ भी बहुत आती हैं, पर इससे बालक पर स्वामित्व या अधिकार की भावना प्रकट करना उचित नहीं। आपके घर वह परमात्मा का मेहमान बनकर आता है। आत्मा की दृष्टि से आप में और बच्चे में कोई असमानता नहीं होती। जिम्मेदारियाँ अधिक होने से आप बड़े अवश्य हैं, पर अपने तमाम कर्त्तव्यों का भली–भाँति निर्वाह आप बच्चों के साथ मित्रवत् व्यवहार करके पूरा कर सकते हैं और स्वयं भी लाभ प्राप्त करें, तो निःसंदेह उसका बड़ा भला कर सकते हैं और स्वयं भी आत्मलाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बच्चों में अच्छी आदतें पैदा कीजिए

अभिभावकों में खासकर माता–पिता के ऊपर बच्चों में अच्छी आदतें डालने, उन्हें सुयोग्य बनाने का उत्तरदायित्व है और सभी माँ–बाप यह चाहते हैं। इसके लिए अभिभावकों में काफी विचारशीलता, विवेक संजीवनी एवं मनोवैज्ञानिक जानकारी का होना आवश्यक है।

बहुत से माँ–बाप तो बच्चों को पैदा करने, खिलाने–पिलाने, स्कूल आदि में पढ़ने की व्यवस्था तक ही अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण समझते हैं, किंतु इससे बच्चों के निर्माण की संपूर्ण समस्या का हल पूरा नहीं होता, हालाँकि बच्चों के विकास में इनका भी अपना स्थान है। बच्चों में अच्छी आदतें डालना, उनमें सद्‌गुणों की वृद्धि करके सुयोग्य बनाना, एक महत्त्वपूर्ण बात है। यह असुरता में देवत्व उत्पन्न करके पशुता को मनुष्यता में बदलने की प्रक्रिया है, एक सूक्ष्म विज्ञान है। बच्चों को प्यार करना, खिलाना–पिलाना, उसका संरक्षण करना, तो पशुओं में भी पाया जाता है।

बच्चों में बढ़ती हुई उच्छृंखलता, अनुशासनहीनता, स्वेच्छाचार एवं अन्य बुराइयों की जिम्मेदारी बहुत कुछ माँ–बाप, अभिभावकों के ऊपर ही होती है। उसकी सामान्य–सी गलतियों, व्यवहार की छोटी–सी भूलों के कारण बच्चों में बड़ी–बड़ी बुराइयाँ पैदा हो जाती हैं, अनेकों बुरी आदतें बच्चों में पड़ जाती हैं। स्वयं माँ–बाप जिसे सुधार समझते हैं, वही बात बच्चों के बिगड़ने का कारण बन जाती हैं।

बच्चों में अनुशासन और आज्ञा पालन की आदत पैदा करने के लिए अधिकांश माँ–बाप फौजी नियमों का अनुसरण करते देखे जाते हैं। किसी भी काम के लिए अधिकारपूर्वक बच्चों को आदेश देते हैं, रौब दिखाकर, दबाव के द्वारा उनसे कोई काम कराना चाहते हैं। कदाचित् बच्चों ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया, तो उनका मार–पीट करना, चीखना–चिल्लाना, गाली देना शुरू हो जाता है, किंतु वे माँ–बाप यह नहीं जानते कि इससे बच्चों में विरोधी भावना, द्वेष–बुद्धि घर कर जाती है और बच्चे जानबूझ कर उपेक्षा, टालमटोल करने वाले किसी बात पर ध्यान न देने वाले अनुशासनहीन और उच्छृंखल बन जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी तरह की आज्ञा देते समय अथवा अनुशासन–पालन की आदत के लिए यह जानना और समझना भी आवश्यक है कि बच्चा उस समय क्या कर रहा है। उदाहरणार्थ बच्चा अपने दिलचस्प खेल में लग रहा है, एकाग्रता के साथ पढ़ रहा है अथवा अपने बाल–मित्रों के साथ खेल–कूद में मस्त है, तो ऐसे समय उसे किसी तरह की आज्ञा नहीं देनी चाहिए। ऐसी स्थिति में प्रायः बच्चे आज्ञा नहीं माना करते। यदि उनके साथ जबरदस्ती और रौब–दबाव का व्यवहार किया गया, तो उनमें रूठने, चिल्लाने, मचलने की आदतें पड़ जाएँगी और फिर हर बात में विपरीतता अर्थात् आज्ञा उल्लंघन, अनुशासन हीनता का परिचय देंगे।

जब बच्चे माँ के पास शांत तथा स्वस्थ मानसिक स्थिति में हों, तो उन्हें आवश्यकतानुसार आदेश दिया जाए और जहाँ तक बने उसे उस आदेश को केवल मनोरंजन के रूप में अथवा किसी नवीनता में परिणत कर देना अधिक श्रेष्ठ रहेगा। आदेश भी रचनात्मक होना चाहिए, 'अमुक करेगा' 'वह लाएगा' 'यहाँ जाएगा' 'यह काम मत कर' 'वहाँ मत जाना' 'उसे मत छूना' आदि के रूप में नकारात्मक आदेश बच्चों में वैसा ही करने का कौतूहल पैदा कर देते हैं और वे उन्हें ही करने लगते हैं, जिनके लिए मना किया जाता है।

अनुशासन आज्ञापालन से संबंधित बातों पर स्वयं बच्चों की राय लेना उत्तम होता है। इससे वे बड़े प्रसन्न होते हैं और तत्परता के साथ उनके लिए प्रयत्न भी करते हैं, क्योंकि उन बातों में उनका भी एक अधिकारमय स्थान होता है। बच्चों को पुकारकर, दूर से चिल्लाकर कोई आदेश न दिया जाए, बल्कि नजदीक बुलाकर और अच्छा तो यह हो कि उसके पास पहुँचकर ही उनसे कोई बात कही जाए। इससे बच्चे उसके मूल्य–महत्त्व को समझेंगे और उसी तत्परता–तन्मयता से उस पर अमल करेंगे।

अनावश्यक रूप से बच्चों को बार–बार टोकना अच्छा नहीं। वैसे बच्चे स्वतः ही किसी पर अधिक नहीं टिकते। थोड़े से समय में ही वे उससे विरत हो जाते हैं, टोकने में तो उनकी थोड़ी–बहुत एकाग्रता–तन्मयता में विक्षेप पड़ता ही है। इतना ही नहीं आगे चलकर ऐसे बच्चे किसी भी काम पर एकाग्र एवं तन्मय नहीं हो पाते, अपने सामने आए हुए काम पर भी नहीं जम पाते,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिससे जीवन में असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

बच्चे को किसी खेल आदि से विरत करने के लिए सीधी निषेधात्मक आज्ञा नहीं देनी चाहिए, वरन् उनके साथ मिलकर सुझाव एवं प्रस्ताव रूप में अपनी बात रखकर उन्हीं से ऐसा निर्णय कराना उत्तम होता है।

बच्चों को दिए जाने वाले आदेश सरल एवं स्पष्ट भाषा में हों, साथ ही उनके साथ अपना प्रभावशाली वजन भी हो। किसी काम को करने की आज्ञा देने से पूर्व यह पूछना कि 'तुम अमुक काम करोगे' तो उससे 'न' में ही उत्तर मिलेगा और किसी भी बात के लिए एक बार ना कह देने पर बच्चों से वह काम कराना और भी कठिन हो जाता है। बच्चों को आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से आज्ञा देनी चाहिए, 'हमारा मुन्ना अमुक काम करेगा, फिर वहाँ जाएगा, इसके बाद यह लाएगा' आदि। इस रूप में आदेश आकर्षक, रचनात्मक, प्रभावशाली, वजनदार होते हैं और वह काम बच्चों के लिए कौतूहल–मनोरंजन के रूप में भी बदल जाता है।

बहुत से माँ–बाप बच्चों के लिए नियमित, व्यवस्थित जीवन बिताने के लिए बड़े ही सख्त और रूखे नियम बना देते हैं, किंतु अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं होते। बहुत से बच्चे उन नियमों के अनुसार चलेंगे नहीं या थोड़ा–बहुत पालन करेंगे, उनकी मौलिकता, आत्म–विश्वास की शक्ति कुंद हो जाएगी। अतः बच्चों पर नियम लादे नहीं जाने चाहिए, वरन् स्वयं उन्हीं की राय को महत्त्व–प्रोत्साहन देकर बच्चों के खाने–पीने, सोने, पढ़ने–खेलने आदि का समय निश्चित कर देना चाहिए। यदि किन्हीं नियमों के कारण बच्चों को किसी तरह की कठिनाई हो, तो उन्हें सरल भी बना देना चाहिए। बच्चों को नियमानुवर्ती बनाने से पूर्व स्वयं माँ–बाप को भी नियमित जीवन बिताकर दिखाना चाहिए। यदि बच्चे अभ्यासवश नियम पालन में कोई गड़बड़ी अथवा भूल करें, तो उन्हें एकदम धमकाना नहीं चाहिए।

केवल नियमादि बनाकर बच्चों पर कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी डालने से काम नहीं चलता। समय–समय पर बच्चों के साथ विचार–विमर्श करना, उनसे बात पूछना, उनके कार्यक्रम, जीवनक्रम आदि के बारे में दिलचस्पी प्रकट करना, अपनी सूझबूझ से बच्चों को नवीन तथ्यों का ज्ञान देना भी आवश्यक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कई माँ–बाप बच्चों को नंगा ही घूमने--फिरने देते हैं किंतु यह आदत बुरी है। छोटे–छोटे बच्चे जब नंगे रहते हैं तो उनमें समय से पूर्व ही यौन भावना जाग्रत हो उठती है। माता–पिता को अपने अबोध छोटे बच्चों के समक्ष भी परस्पर प्रेम प्रदर्शन नहीं करना चाहिए इससे बच्चों के अंतर्मन पर सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है। समझदार बोध रखने वाले बालक तो यह सब देखकर आश्चर्य करते हैं। उनके लिए एक कौतूहल की बात हो जाती है और फिर बच्चे भी परस्पर वैसा ही करने का प्रयास करते हैं। बच्चों में फैलती हुई अपराध प्रवृत्ति, यौन भावनाजन्य अपराधों के मूल में माँ बापों की यह भूल भी एक मुख्य कारण है। असमय में ही उत्पन्न यौन--भावना को बच्चे गलत तरीकों से व्यक्त करते हैं। बच्चों के समझदार हो जाने पर तो उन्हें हमेशा अलग कमरे में अलग–अलग बिस्तरों पर सुलाना चाहिए। अभिभावकों को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि अपनी किसी भी चारित्रिक कमजोरी को भूलकर भी बालकों के समक्ष प्रकट न होने दिया जाए।

बच्चों के सद्‌गुणों, उत्कृष्ट आदतों की प्रतिष्ठापना के लिए पहले स्वयं अभिभावकों को अपने आप में उनका प्रतिष्ठापन करना आवश्यक है। अपना सुधार किए बिना बालकों को सुधारने का प्रयत्न विडंबना मात्र है। स्वयं बीड़ी पीते हुए बच्चों को धूम्रपान न करने का उपदेश देना क्या भूल नहीं है ? बच्चों से जिन गुणों की आशा की जाए, उन्हीं से संबंधित वातावरण आस–पास होना चाहिए। सच बोलना सिखाने के लिए घर का वातावरण भी सचाई से भरा हुआ होना चाहिए। दवा पिलाने, अस्पताल में फोड़ा चिरवाने अथवा इंजेक्शन लगाने के लिए बच्चों को बहाना करके या झूँठ बोलकर ले जाना, बच्चों को धोखा देना, उनमें वैसी ही आदतें पैदा करना है। बच्चे फिर उन्हीं बातों का अवलंबन लेते हैं, उन्हें फिर माँ–बापों की आदर्श भरी बातों में भी संदेह होने लगता है और उन्हें झूठा मानने लगते हैं।

चोरी की आदत से बचने के लिए बच्चों को जब से अपने--पराए का ज्ञान होने लगे, तभी से यह सिखा देना चाहिए कि बिना माँगे किसी वस्तु का लेना चोरी है। चोरी की आदत पड़ जाना बच्चों के लिए घातक है। चोरी से दरअसल बच्चे की मनचाही इच्छाएँ शीघ्र ही पूरी हो जाती है। माँ–बाप की सतर्कता से बच्चों में चोरी की आदत घर नहीं करती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छोटी उम्र से ही बालकों में कोमल भावनाओं का विकास करना चाहिए। बच्चों में सद्भावना, सबके हित का ध्यान रखने की वृत्ति पैदा करना, माँ–बाप के ऊपर ही निर्भर है। जो माँ–बाप दूसरे तथा अपने बालकों के बीच व्यवहार करते समय कोई भेदभाव नहीं रखते और न किसी तरह का दुराव–छिपाव ही रखते हैं। वे बालक अपना ही नहीं, सबके अस्तित्व का एक साथ ध्यान रखते हैं, उनमें भेदभाव करने की भावना नहीं रहती।

बालकों में अनुकरण करने की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति होती है। माँ–बाप, अभिभावकों का जीवन उसके लिए निकटतम और आत्मभाव से भरा हुआ प्रतीक आदर्शों का केंद्र होता है। इस प्रकार माँ–बाप के ऊपर ही बालकों के निर्माण का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। माँ–बाप अपने इस उत्तरदायित्व को समझें और प्रयत्न करें, इन खिलते हुए कुसुमों में सद्गुण, सद्भाव, अच्छी आदतें, सदाचार, शील, पुरुषार्थ, साहस आदि का सौंदर्य और सुगंधि भर जाए, तो सामान्य से बालकों में ही अनेकों महापुरुष निकल सकते हैं। प्रकृति शरीर देती है, किंतु मनुष्य उसे व्यक्तित्व, मनुष्यता देता है।

बच्चों को व्यवहार कुशल बनाइए

बालकों को व्यवहार कुशल बनाने के लिए उनमें उत्तरदायित्वों की भावना का विकास करना बहुत आवश्यक है। जिन बालकों में उत्तरदायित्व का भाव जाग जाता है, वे हर काम बड़ी होशियारी से करते हैं। हर समय इस बात का ध्यान रखते हैं कि उनसे कोई काम बिगड़ न जाए। उन पर कोई उँगली न उठा सके अथवा किसी समय वे उपहासास्पद न बन जाएँ।

व्यवहार–कुशलता का सीधा–सा अर्थ है, कोई ऐसी बात या कोई ऐसा कार्य न करना, जिससे किसी को कोई तकलीफ पहुँचे अथवा वे आलोचना या उपहास के पात्र बन जाएँ।

यद्यपि सारे क्षेत्रों में किसी का पूर्णरूपेण कुशल होना असंभव जैसी बात है तथा समाज में साधारण व्यवहार कुशलता प्राप्त कर लेना, सबके लिए सुसाध्य एवं आवश्यक है। जो सामान्य सामाजिक व्यक्ति व्यवहार में कुशल नहीं होते हैं, अंदर से अच्छे होते हुए भी समाज में उचित स्थान नहीं पा सकते। लोग उनके विषय में यह कहकर आलोचना किया करते हैं कि अमुक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति हो सकता है अंदर से अच्छा हो, किंतु व्यवहार में अच्छा प्रतीत नहीं होता है और समाज में इस प्रकार की धारणा लोगों को उसके प्रति शंकालु बनाए रखती है।

समाज में विनिमय, वार्तालाप, संबंध एवं सामंजस्य, ये चार ऐसी बातें हैं जिनकी पृष्ठभूमि पर ही सारे सामाजिक व्यवहार आधारित रहते हैं। इन चार बातों में ठीक से व्यवहार कर सकने की योग्यता प्राप्त कर लेना ही व्यवहार दक्षता है।

विनिमय का अर्थ है–आदान–प्रदान अथवा लेन–देन। जो पैसे का, वस्तु का, भावनाओं का अथवा विचारों का हो सकता है। विनिमय के व्यवहार में जहाँ तक हो सके, सीमित, स्पष्टता एवं ईमानदारी रखनी चाहिए। जैसे कोई वस्तु खरीदते समय अपनी चतुरता अथवा हीलोहुज्जत से दुकानदार को साधारण भाव से कम कीमत देने का प्रयत्न न करना चाहिए, क्योंकि इससे दुकानदार अपना नुकसान तो करेगा नहीं और न उसे ग्राहक समझकर ऐसे व्यक्ति के हाथ कोई चीज बेचना भी पसंद नहीं करेगा। यदि एक बार वह ग्राहक बनाने के लिए दब जाएगा, तो दूसरी बार दुगने पैसे वसूल कर लेगा और सबसे पहले घटिया चीज भिड़ाने की कोशिश करेगा। बार–बार ऐसा करने वाले व्यक्ति की साख ग्राहक के रूप में कम हो जाती है और हजारों रुपयों का सामान खरीदने पर भी वह आदर नहीं मिल पाता, जो उसे मिलना चाहिए था।

अब रही कोई चीज बेचने की बात। कोई वस्तु बेचते समय साधारण भाव से अधिक पैसे लेने के लिए बढ़ा–चढ़ाकर मूल्य बतलाना, घटिया चीज भिड़ाना या असंतोषजनक ढंग से विक्रय करने वाले की दुकानदार के रूप में साख खराब हो जाती है। वह एक बड़ा दुकानदार होने पर भी न तो अपेक्षित बड़प्पन पा सकता है और न अधिक समय तक अपनी स्थिति बनाए रख पाता है, धीरे–धीरे ग्राहक संख्या कम करता हुआ छोटा–सा ही दुकानदार रह जाता है। इसी तरह पैसा लेन–देन में, समय और परिणाम में यथासंभव हेरफेर करने का प्रयत्न करना चाहिए और यदि किसी भ्रम, भूल या परिस्थितिवश ऐसा हो जाए या करना पड़े, तो ईमानदारी से उसका स्पष्टीकरण करने में संकोच न करना चाहिए। वार्तालाप में सत्यता, शिष्टता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एवं देश--काल का विचार रखना चाहिए। सत्य यदि शिष्ट नहीं है अथवा शिष्टता से परे हैं या यह दोनों बातें देश, काल के अनुरूप नहीं हैं, तो अनुचित ही मानी जाएँगी।

संबंध मूलतः छोटे, समान, बड़े, योग्यता एवं विशेषता के अनुसार छः प्रकार के होते हैं। जो जिस योग्य हो, उससे उसी प्रकार का व्यवहार अपेक्षित है, इसके प्रतिकूल व्यवहार करना, किसी भी दशा में ठीक नहीं है। जो जिस योग्य है, उसको उसके अनुरूप स्थान देना, बहुत बड़ी व्यवहार कुशलता है। छोटों से स्नेहिल संबोधनों से निःसंकोच और बड़ों से आदरपूर्वक बर्ताव करना चाहिए। पद में बड़े और आयु में छोटे व्यक्ति भी आदर और अदब के अधिकारी होते हैं। अपने से अधिक योग्यता अथवा किसी क्षेत्र में विशेषता (जैसे कला आदि) रखने वाले व्यक्ति भी अपने से बड़े अथवा उच्च पद पर न होते हुए भी सम्मान एवं सद्व्यवहार के पात्र होते हैं। उनसे व्यवहार करने में इन बातों का ध्यान रखना न केवल आवश्यक ही है, अपितु अनिवार्य भी है।

सामंजस्य का अर्थ है--अपने को इस तरह बताना कि हर व्यक्ति हर परिस्थिति तथा हर स्थान से समुचित समानता दिखला सकें। जैसे दूसरे के दुःख में दुःख, सुख में सुख। परिस्थिति से अनुकूलता, स्थान से निरपेक्षता का भाव प्रकट कर सकें। किसी सुख--दुःख में उदासीन रहना, प्रतिकूल परिस्थिति में अधैर्य अथवा अयोग्य स्थान पर क्षोभ अथवा घृणा व्यक्त करना ठीक नहीं है। अपने अवांछनीय आवेगों पर नियंत्रण रखना, व्यवहार कुशलता की एक महत्त्वपूर्ण शर्त है।

इस प्रकार इन व्यवहार संबंधी आवश्यक बातों की शिक्षा देते हुए यदि बालकों का पालन किया जाए, तो कोई कारण नहीं कि वे व्यवहार--कुशल न बन जाएँ। प्रारंभ से ही बालकों में इसकी चेतना का विकास किया जाना चाहिए, जिससे वे स्वतंत्र व्यवहार करने की आयु तक पहुँचते--पहुँचते दक्षता प्राप्त कर लेंगे। जिन बालकों में इन बातों का विकास प्रारंभ से नहीं किया जाएगा, वे बालक उस आयु तक दक्षता प्राप्त न कर सकेंगे, जिसमें पहुँचकर उनका कोई भी व्यवहार महत्त्व रखता है और अच्छा या बुरा कहा जा सकता है।

बालक जब कुछ समझदार होने लगें, यह कार्यक्रम तभी शुरू कर दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाना चाहिए। सबसे पहले उन्हें परिवार के सदस्यों का परिचय कराया जाना चाहिए और उसी के अनुसार उनसे व्यवहार का अभ्यास। यह माता है, वह पिता है, यह बड़ी बहन है, यह बड़े भाई आदि बतलाते हुए भी बतलाना चाहिए कि उनके चरण छूना, उनके प्रति आदर रखना, उनकी आज्ञा मानना उनका परम कर्त्तव्य है। जो अपने से बड़े हैं, शिष्ट और अच्छे बच्चे उनसे तुम नहीं आप कहकर बोलते हैं उनसे गुस्सा नहीं करते और न कभी उनका तिरस्कार करते हैं। इसका अभ्यास कराने के लिए जब भी इनमें से किसी को बुलवाएँ या उसे उनके पास किसी काम से भेजें, जब कभी भी ऐसा निर्देश न दिया जाना चाहिए, जिससे उनमें अनादर का भाव पैदा होने की संभावना रहे। जैसे 'मुनिया को बुला लाओ' 'विमलेश को आवाज देना' या 'देखना, अम्मा क्या करती हैं ?' इसके विपरीत कहना इस तरह चाहिए कि अपनी दादीजी को बुला लाइए, अपने दद्दा, बड़े भाईसाहब या दादाजी को आवाज दीजिए। जरा देखकर आइए कि आपकी माताजी क्या कर रही हैं ? कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रकार निर्देश देने से उसमें उस समय अदब की भावना ताजी हो उठेगी और वह उन्हीं शब्दों में उनसे बोलेगा, क्योंकि बालकों के प्रारंभिक शब्द और संबोधन परिवारीजनों एवं गुरुजनों के प्रति ही दिए होते हैं। इस प्रकार हर समय इस बात का ध्यान रखने से कुछ ही समय में गुरुजनों से आदरपूर्वक व्यवहार करना सीख जाएगा।

व्यवहार में वार्तालाप का एक प्रमुख स्थान है। जिन बालकों को शुरू में ही शब्द और स्वर के सौंदर्य का अभ्यास करा दिया जाता है, वे आगे चलकर बड़े मधुर तथा उपयुक्त भाषी हो जाते हैं। शब्द का गलत उच्चारण करना, स्वर को अनावश्यक रूप से ऊँचा–नीचा करकेबोलना अथवा वाक्यों को पूर्ण और ठीक न बोलना, संभाषण का आकर्षण समाप्त कर देता है, जिससे दूसरों को उनकी बात न समझ में ठीक से आती है और न वे पसंद ही करते हैं। अस्तु, शब्द, स्वर और वाक्य विन्यास ठीक रखने के लिए उसे बहुत पहले से प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

संभाषण में नम्रता तथा देश, काल और संबंध का विशेष ध्यान रखना चाहिए, किंतु जिस भाषण में अधिक से अधिक सत्यता का समावेश नहीं है, वह नम्र और संयत होने पर भी अच्छा नहीं है। इससे बालक दूसरे की नजर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में झूँठा, गप्पी और अविश्वस्त हो जाता है और समाज में उसका आदर नहीं होता है।

इस प्रकार जो बालक विनिमय, वार्तालाप, संबंध और सामंजस्य के ज्ञान से परिपूर्ण कर दिए जाते हैं, वे निस्संदेह व्यवहार कुशल होकर समाज में अच्छे नागरिक बनकर अपना निश्चित स्थान प्राप्त कर लेते हैं।

बच्चों का पालन-पोषण कैसे करें ?

बच्चों के शारीरिक और मानसिक जीवन का गठन बहुत कुछ अभिभावकों पर निर्भर करता है। पालन–पोषण से संबंध रखने वाली बहुत–सी बातें भी बच्चों के जीवन में महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं। वैसे प्रत्येक बच्चे के स्वभाव, संस्कार, मूल प्रवृत्तियों में अपनी कुछ न कुछ विशेषताएँ ठीक उसी तरह होती है, जैसे सबके अलग–अलग चेहरे, अँगूठे की अलग–अलग छाप। फिर भी माँ–बाप द्वारा बच्चों का पालन–पोषण उनके विकास में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। अच्छी तरह खाद–पानी देकर, काट–छाँट करके माली पौधों को अधिक उपयोगी और फलदायी बना सकता है। उपेक्षा, साज–सँभाल के अभाव में मूल्यवान पौधा भी सूख जाएगा या अविकसित, भौंड़ा रह जाएगा, जिससे मधुर फलों की कोई आशा नहीं की जा सकती। इसी तरह बच्चों का ठीक–ठीक पालन–पोषण किया जाए, उनकी शिक्षा का समुचित ध्यान रखा जाए, तो मनुष्य की शक्ल में पैदा होने वाला प्रत्येक बालक उत्कृष्ट और महान् व्यक्ति बन सकता है। इसके विपरीत ठीक–ठीक पालन न होने पर बालकों के निर्माण में ध्यान न देने से होनहार बालक भी अविकसित रह जाते हैं।

बाल्यकाल में जिन आदतों की नींव लग जाती है, वे ही सारे जीवन भर अपना प्रभाव डालती रहती हैं। वस्तुतः बाल्यकाल संपूर्ण जीवन की नींव है। बच्चों की कोमल मनोभूमि पर पड़े हुए विभिन्न प्रभाव उनके मानस पटल पर चित्रवत् अंकित हो जाते हैं। अच्छा या बुरा जैसा भी प्रभाव बच्चों पर पड़ता है, वैसे ही वे बन जाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़े, उन्हें अच्छाइयों की प्रेरणा मिले। यह सब माँ–बाप के ऊपर ही निर्भर है। बच्चों का पालन–पोषण एक महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व है, इसे पूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
करने के लिए उन्हें काफी समझदारी, ज्ञान, विचारशीलता से काम लेना आवश्यक है।

कई माता–पिता बच्चों पर आवश्यकता से अधिक प्यार, स्नेह–लाड़ करते हैं। हालांकि बच्चों के लिए स्नेह, प्यार–दुलार की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी उन्हें खिलाने–पिलाने की। अभिभावकों के लाड़–प्यार से बच्चों का मानसिक विकास होता है, उनके जीवन में सरसता पैदा होती है, उसका व्यक्तित्व पुष्ट बनता है, किंतु अमर्यादित लाड़–प्यार बालकों के जीवन में अनेकों बुराइयाँ पैदा कर देता है। जब अमर्यादित लाड़–प्यार से बच्चों को कोई काम नहीं करने दिया जाता, उनकी अनुचित माँगों को पूरा करने में कोई कसर नहीं रखी जाती, तब उनके तनिक से रूठने–मचलने या दूसरे बच्चों की शिकायत कर परेशान हो जाना माँ–बाप की ऐसी भूल है जिनसे बच्चों में अनेकों बुराइयाँ, खराब आदतें पैदा हो जाती हैं। ऐसे बच्चे आत्म–निर्भर, स्वावलंबी नहीं बन पाते, वे अपने प्रत्येक काम की पूर्ति दूसरों से चाहते हैं। परावलंबन, आलस्य, आरामतलबी, फिजूलखर्ची, आवारागर्दी आदि बुराइयाँ माँ–बाप की उन सामान्य–सी भूलों से ही पैदा होती हैं, जो बच्चों के लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा में उन्होंने लाड़–प्यार वश कीं। यह एक आम बात है कि लाड़ले बच्चे अक्सर बिगड़ जाते हैं। ऐसे बच्चों में जिंदगी के कठिन दिनों में चलने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

प्रत्येक बालक में अपनी एक जन्म–जात प्रतिभा होती है, एक विशेषता होती है। बच्चे की इस मूलभूत प्रतिभा–प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर उसी दिशा में उसे बढ़ाया जाए, तो वह एक दिन असाधारण की स्थिति प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत यदि बालक को उसकी मूल प्रवृत्ति–प्रतिभा के विपरीत चलाया जाएगा, तो वह विशेष सफलता, विकास की स्थिति प्राप्त करने में असमर्थ रहेगा। यह बेचारा सामान्य–सी घिसी–पिटी जिंदगी ही व्यतीत करेगा, ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि माता–पिता बच्चे की मूल प्रवृत्ति, मूल प्रतिभा को जानें और उसी के अनुरूप उसे विकसित होने की दिशा, साधन–सुविधाएँ प्रदान करें। जो माँ–बाप अपने ही दृष्टिकोण से अपने इच्छानुसार बच्चे का भविष्य देखना चाहते हैं, वे बड़ी भूल करते हैं। इंजीनियर का लड़का इंजीनियर बने, कलाकार का कलाकार और वकील का लड़का भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वकालत करे, यह कोई नियम नहीं है। रुचि, प्रतिभा, मूल प्रवृत्ति में अभिभावक और बच्चे के कार्यक्रमों में असमानताएँ रहनी स्वाभाविक ही हैं। अत: एकाकी निर्णय, एकाकी दृष्टिकोण से बच्चे के भावी जीवन की रूपरेखा न बनाई जाए। संगीत प्रतिभायुक्त बच्चों को क्लर्क–राजनीतिज्ञ बनाना, संवेदनशील भावुक कोमल हृदय बच्चों को डाक्टर बनाना, चिंतनशील दार्शनिक विचारक बच्चों को तराजू तौलने की दुकान पर बैठाना, अभिभावकों की बड़ी भारी भूल है। इससे बच्चों की मूलभूत प्रतिभा का विकास नहीं होता, वे सामान्य सा जीवन ही बिताते रहते हैं।

बच्चों को अपने बाल साथियों में न खेलने देना, दूसरे बच्चों से मिलने–जुलने से रोकना भी ठीक नहीं। परस्पर दूसरे बच्चों में मिलने–जुलने से ही बालकों का विकास होता है, उनमें मेल–जोल की वृत्तियाँ पैदा होती हैं, किंतु कई अभिभावक संकीर्ण मनोभूमि के कारण बच्चों के बिगड़ जाने के भय से, आवारा बन जाने की शंका से बच्चों को दूसरे बच्चों से मिलने–जुलने नहीं देते। उन्हें बार–बार डाँटते–फटकारते हैं और रोकते हैं, इससे बच्चों में कई मानसिक विकृतियाँ पैदा हो जाती हैं। ऐसे बच्चे आगे चलकर अन्यमनस्की, एकाकी, असामाजिक वृत्ति के बन जाते हैं, वे दूसरों से मिलने–जुलने में संकोच अनुभव करते हैं, संसार उन्हें कैद की तरह लगता है, उनकी कोमल भावनाएँ कुंठित हो जाती हैं। यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि बच्चों को ऐसे ही बालकों से मिलने–जुलने दिया जाए, जो सभ्य घरों में जन्मे और श्रेष्ठ वातावरण में पले हों तथा सुसंस्कृत हों। कुसंस्कारी, बुरे–आवारा बालकों से तो बच्चों को बचाए रहना ही उचित है।

कई माँ–बाप बच्चों को यह सोचकर कि उनका बच्चा अधिक पढ़ेगा, अधिक परिश्रम करेगा और उन्नत बनेगा, बार–बार टोकते हैं, बार–बार आदेशपूर्ण दबाव डालते रहते हैं। दूसरे लड़कों की तुलना करते हुए समझाते हैं 'अमुक तो इतना होशियार है, उसकी बराबरी यह क्या करेगा ?' इस तरह कई माँ–बाप अपने बच्चों को कहते–सुनते देखे जाते हैं, वे सोचते हैं कि इससे बच्चा अधिक मेहनत करेगा, किंतु परिणाम इसके विपरीत ही निकलता है। इससे बच्चों का आत्म–विश्वास नष्ट हो जाता है, उन्हें अपनी शक्ति–सामर्थ्य और सफलता में संदेह होने लगता है। कई बच्चों में तो वह संदेह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इतना प्रबल हो जाता है कि वे असफलता को निश्चित मानकर प्रयत्न ही नहीं करते। जैसे–तैसे अधूरे मन से प्रयत्न भी करते हैं, तो सफल नहीं होते। बच्चों को हीन--कमजोर बनाना, उनकी बार–बार आलोचना करना, उन्हें वैसा ही बनाना है जैसा अभिभावकगण स्वयं नहीं चाहते। बालकों से स्पर्द्धा की, प्रोत्साहन और प्रेरणा भरी बातें कहना, उनके आत्मविश्वास के उत्साह को बढ़ाना ही उनके जीवन की सफलता, प्रौढ़ता एवं विकास का रहस्य है। इतना ही नहीं गलतियों, भूलों से होने वाली हीन प्रतिक्रिया को ही बालकों के मानस–पटल से दूर कर देना चाहिए। इससे महत्त्वपूर्ण कार्यों में निर्भीकता, निःसंकोच हाथ डालने की क्षमता और जीवन–पथ पर आगे बढ़ते रहने की मानिसक दृढ़ता प्राप्त होती है।

बच्चों को जन्म देना, उनका पालन–पोषण करना, उनकी साज–सँभाल रखना, माँ का उत्तरदायित्व है, किंतु बालकों की शिक्षा–दीक्षा, उनका मानसिक विकास, स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण उन्हें मनुष्य बनाने का महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व पिता पर ही है। स्कूल–कॉलेज में भी पुस्तकीय ज्ञान, अक्षरज्ञान ही हो पाता है, किंतु जीवन के आंतरिक एवं बाह्य समग्र ढाँचे का निर्माण पिता द्वारा ही पूर्ण होता है, यह एक निश्चित तथ्य है। इसके लिए बच्चों और पिता में नित्यप्रति का संपर्क रहना, पिता द्वारा बच्चों के जीवन में गहरी दिलचस्पी का होना आवश्यक है। अक्सर आजकल के संघर्षमय–भागदौड़ के जीवन में इसकी भी कमी होती चली जा रही है। बच्चों से पिता का संपर्क बहुत कम हो पाता है या इसका सर्वथा अभाव ही रहता है। वकील, व्यापारी, डाक्टर, शिक्षक, राजनीतिज्ञ, नेता सभी अपने कार्यक्रमों में इतने व्यस्त रहते हैं कि वे इसके लिए अपना कुछ समय भी नहीं दे पाते, अन्य सामान्य अशिक्षित लोगों को इसका ज्ञान ही नहीं होता। कई लोग बच्चों में घुलना–मिलना उचित नहीं समझते, कुछ भी हो, किंतु यह एक भारी भूल है।

पिता के साथ खेलने की बालकों में एक स्वाभाविक भूख होती है, जिसके तृप्त न होने पर बालकों का मानसिक विकास नहीं होता और वे परित्यक्त की तरह निराशा, उदासीनता, अवसाद से ग्रस्त हो जाते हैं। मानसिक दृष्टि से ऐसे बच्चे जिन्हें पिता का संपर्क प्राप्त नहीं हुआ, अविकसित, फूहड़ एवं अयोग्य निकलते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बड़े आदमी जो बच्चों के लिए कुछ भी समय नहीं लगाते उनके बच्चे अधिक बिगड़ते देखे जाते हैं। अतः एक पिता होने के नाते व्यक्ति को प्रतिदिन कुछ समय बच्चों के लिए अवश्य निकालना चाहिए। समाज में भले ही कोई कुछ भी हों, बड़ी संपत्ति के मालिक बड़े राजनैतिक वैज्ञानिक व्यापारी, वकील आदि से लेकर सामान्य श्रेणी के व्यक्ति भी अपने बच्चों के लिए पिता ही हैं और पिता के कर्त्तव्य–उत्तरदायित्व को निभाना भी उनके लिए उसी तरह अनिवार्य–आवश्यक है, जिस तरह उसका पिता होने का अधिकार है।

बालकों का समुचित विकास करिए

समुचित विकास का अर्थ है–बालक की शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक वृद्धि। जब तक बालक में इन तीनों शक्तियों का संतुलित विकास नहीं होता, उसका व्यक्तित्व अपनी चरम सीमा पर नहीं पहुँचता और व्यक्तित्व की पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं होती। मनुष्य जीवन की महान् उपलब्धियों को प्राप्त नहीं कर पाता, समाज उसको या तो समझ ही नहीं पाता या समझने में भूल करता है। जिसका जितना ही उज्ज्वल चित्र समाज के सामने रहता है, वह उतना ही ठीक पहचाना जाता है।

समुचित विकास के लिए बालक को प्रेरणा देने से पहले यह आवश्यक है कि शारीरिक विकास, मानसिक विकास और बौद्धिक विकास का क्या अर्थ है ? यह समझ लेना चाहिए। शारीरिक विकास का अर्थ है–शरीर का सुघड़, स्वस्थ और सशक्त होना । मानसिक विकास का अर्थ है–मन का प्रसन्न, प्रफुल्ल, निर्भीक, साहसिक, विश्वस्त और स्थिर होना । बौद्धिक विकास का अर्थ है–किसी बात के ठीक–ठीक समझने–समझाने और निर्णय में बुद्धि का समर्थ होना और समुचित विकास का अर्थ है–इन तीनों बातों का साथ–साथ समान रूप से वृद्धि पाना।

सबसे पहले बालक का शारीरिक विकास प्रारंभ होता है, उसके बाद बौद्धिक और तत्पश्चात् मानसिक। इस क्रम से विकास होने के कारण शारीरिक विकास अन्य दोनों विकासों की आधारभूमि मानी जाती है। अतएव अभिभावकों का पहला कर्त्तव्य है–बालक के शारीरिक विकास पर समुचित ध्यान देना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बालकों को उसकी आयु के अनुरूप शुद्ध और सुपाच्य वस्तुएँ खिलानी चाहिए, क्योंकि प्रौढ़ों की पाचनशक्ति और बच्चों की पाचन शक्ति में अंतर होता है। अधिकतर सभी घरों में सब को एक ही समान भोजन दिया जाता है। क्या बच्चे क्या प्रौढ़ एक ही प्रकार की बनी रसोई खाते हैं। न किसी के अलग भोजन की व्यवस्था होती है और न इसकी आवश्यकता अथवा महत्त्व समझा जाता है।

प्रायः सभी अभिभावक वह चीजें बच्चों को भी खिलाते हैं, जो उन्हें पसंद होती हैं। बच्चा यदि अपनी प्रकृति अथवा आयु के प्रतिकूल कोई चीज ना पसंद भी करता है, तब भी उसे थोड़ी–थोड़ी और बार–बार खिलाकर उन चीजों का अभ्यास कराते हैं। वे सदैव यह चाहते रहते हैं कि बच्चा ठीक उनके ही अनुसार हर बात का अभ्यस्त होकर ठीक–ठीक उनका ही प्रतिरूप बने। समान भोजन का अभ्यास बना लेने में उन्हें एक सबसे बड़ी सुविधा यह दीखती है कि बच्चे के लिए अलग से भिन्न प्रकार की वस्तुएँ बनाने का झंझट नहीं करना पड़ता। वे इसमें कम समय और पैसे की बचत की सुविधा देखते हैं, बच्चे के स्वास्थ्य को नहीं देखते। मिर्च–मसालों वाला भोजन भी बच्चे को खिलाने में संकोच नहीं करते। यद्यपि वह मिर्च आदि मुँह में लगते ही रोने लगता है, तथापि उनको यह विचार नहीं आता कि यह चीज उनके प्रतिकूल हैं, नहीं खिलानी चाहिए। इसके विपरीत बहुतों को यह विश्वास होता है कि मिर्च–मसालों से बच्चों की पाचन क्रिया को शक्ति मिलती है और उसकी जुवान खुलती है, यह भूल है। मिर्च–मसाले बच्चे की पाचन क्रिया को खराब कर देते हैं और उसके स्वस्थ बनने में बाधक होते हैं।

जब बालक का शारीरिक विकास समुचित रूप से होता चलेगा, तो अन्य दो विकास भी ठीक–ठीक होंगे। भोजन का प्रभाव मन और मस्तिष्क पर भी पड़ता है। जिस प्रकार का भोजन बच्चे को दिया जाएगा, उसी प्रकार का उसका मन और मस्तिष्क बनेगा। 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन और मस्तिष्क होता है'–इस सिद्धांत के अनुसार उसे केवल वे ही चीजें खिलाई जानी चाहिए, जो उसके शरीर, मन और मस्तिष्क के अनुकूल हों, जिनसें शरीर स्वस्थ, मन सबल और बुद्धि प्रखर बनें।

बौद्धिक विकास के लिए उसे ऐसे वातावरण में रखना चाहिए, जो उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुकूल हो, उससे बुद्धिवर्द्धक बातें की जानी चाहिए और ऐसे खेल खिलाया जाना चाहिए, जिसमें उसे थोड़ा–बहुत बुद्धि का प्रयोग करना पड़े। व्यावहारिक बातों में क्या कैसे होता है, ऐसा क्यों है, ऐसा क्यों नहीं होना चाहिए ? आदि तर्क पद्धति से सोचने और समझने का अभ्यस्त बनाना चाहिए। इनसे उसमें विचार शक्ति का उदय होगा और वह हर बात पर विचार करने लगेगा। बुद्धि का अधिकाधिक उपयोग ही बौद्धिक विकास का सबसे अच्छा साधन है।

उसे सामान्य रूप से उपयोग और प्रयोग में आने वाली चीजों का प्रारंभिक ज्ञान कराया जा सकता है। जैसे–दूध कैसे प्राप्त होता है ? उसकी क्या उपयोगिता है ? वह कब हानि और कब लाभ करता है ? अच्छे और खराब दूध की क्या पहचान है ? अन्न कैसे उत्पन्न होता है ? कौन–सा अन्न कैसा होता है और उसकी क्या पहचान है ? सब्जियाँ कैसे उगाई जाती हैं ? कपड़ा कैसे बनता है ? कापी, कागज, किताबें आदि किस प्रकार इस रूप में आती हैं ? आदि । तात्पर्य यह है कि नित्य प्रति प्रयोग में आने वाली चीजों के माध्यम से उसमें ज्ञानोपार्जन की एक प्रवृति का जागरण किया जा सकता है, जिससे आगे चलकर उसमें अधिकाधिक ज्ञान की जिज्ञासा उत्पन्न हो जाएगी और वह अध्ययनशील एवं अन्वेषणशील बन जाएगा, जिससे बौद्धिक विकास में पर्याप्त लाभ होगा।

पाठशाला में भेजने से पूर्व बच्चे को साल–दो–साल घर पर पढ़ा लेना चाहिए, जिससे कि शिक्षा के अनुकूल उसका बौद्धिक धरातल तैयार हो जाय। घर पर शिक्षा देने से इस बात का भी पता लग जाएगा कि किन विषयों में उसकी विशेष रुचि है और कौन से विषय उसे कठिन पड़ते हैं। इसका पता लग जाने से शिक्षक को उससे अवगत कराया जा सकता है, जिससे शिक्षक को उसे समझाने और पढ़ाने में सुविधा हो। साथ ही जब कोई बच्चा कुछ अपनी योग्यता लेकर घर से पाठशाला जाएगा, तो पढ़ना उसके लिए एकदम कोई नई चीज न होगी और वह कक्षा में ठीक से चल सकेगा। अधिकतर बच्चे ३–४ वर्ष की आयु में ही पाठशाला की ओर हाँक दिए जाते हैं, जिससे वह नए काम और नई जगह के कारण घबराते हैं, रोते हैं और बचना चाहते हैं। नित्यप्रति पाठशाला जाने के समय अनुरोध का झंझट पैदा होता है, जिससे अभिभावक को झल्लाहट और बच्चे को अरुचि पैदा होती है और कभी–कभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो माता–पिता परेशान होकर उसे शिक्षा के अयोग्य समझ कर इस ओर से उदासीन हो जाते हैं और यह धारणा बनाकर पढ़ने से बिठा लेते हैं कि इसके भाग्य में विद्या है ही नहीं। अस्तु पाठशाला भेजने से पहले यदि उसके अनुकूल उसका बौद्धिक धरातल घर पर ही तैयार कर दिया जाय, तो इस प्रकार की संभावनाओं का अवसर ही न आए।

शिक्षा के विषय में केवल शिक्षालयों तथा शिक्षकों पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए। स्वयं भी देखना चाहिए कि उनका बच्चा पढ़ाई–लिखाई में क्या प्रगति कर रहा है? कमजोर बच्चों की अभिभावकों को स्वयं पढ़ाई में कुछ न कुछ सहायता करनी चाहिए। साल बचाने के लिए एक कक्षा से दूसरी कक्षा में पहुँचाने के लिए व्यर्थ प्रयत्न न करना चाहिए। शिक्षा को योग्यता के मापदंड से नापना चाहिए, न कि कक्षा की श्रेणी से। आशय यह है कि बच्चे के लिए शिक्षा की ऐसी अवस्थाओं और व्यवस्थाओं का प्रबंध करना चाहिए, जिससे कि वे दिन–दिन योग्य बन सकें।

मानसिक विकास के लिए उन्हें अधिक से अधिक प्रसन्न एवं विशुद्ध वातावरण में रखने का प्रयत्न करना चाहिए। न उन पर इतना नियंत्रण करना चाहिए कि वे मुर्दा मन हो जाएँ और न इतनी छूट देनी चाहिए कि वे उच्छृंखल हो जाएँ। इन्हें भय से मुक्त करने के लिए साहस की कथाएँ सुनाई जानी चाहिए और उदाहरण देने चाहिए। उन्हें किसी बात से सावधान करना चाहिए, किंतु भयभीत नहीं। धीरे–धीरे कठिन कामों का अभ्यस्त बनाना चाहिए, काम बिगड़ जाने पर उनका उपहास न करके सुधार की शिक्षा देनी चाहिए और समुचित सराहना से प्रोत्साहित करना चाहिए। उसके सामने क्रोध, लोभ, स्वार्थ अथवा असद्भावनाओं की परिस्थितियाँ न आने देना चाहिए। उन्हें अच्छी बातों के लिए प्रोत्साहित और बुरी बातों के लिए हतोत्साहित करना चाहिए। उनके सामने कभी भी ऐसी बातें न की जानी चाहिए, जिनसे मन पर कोई बुरा प्रभाव पड़े। अभिभावकों को अपने व्यसनों की पुष्टि उनकी नजर बचाकर करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा न करने से वे भी व्यसनी बन सकते हैं और तब उन पर समझाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बच्चों को भीरु नहीं, वीर बनाइए

बच्चा जन्म से कायर नहीं होता। उसकी नैसर्गिक प्रकृति इतनी निर्भीक होती है कि वह साँप, चूहे, बिल्ली, बंदर जो भी पास आए, पकड़ने को ही दौड़ता है। उसे प्रत्येक वस्तु खेल की, विनोद की वस्तु लगती है और संभवतः वह इसीलिए बिना हिचक के प्रत्येक वस्तु की ओर दौड़ पड़ता है। बच्चे के मस्तिष्क में पूर्वारंभ में भय की भावना न जगाई जाए, तो हमारा विश्वास है कि वह कभी कायर नहीं हो सकता। घर का वातावरण और माता–पिता का त्रुटिपूर्ण संरक्षण ही उन्हें भीरु बनाता है। भारतवर्ष की अतीतकालीन परंपराओं की दृष्टि से यह अभिशाप–सा लगता है कि हमारे बच्चे डरपोक बनें। वीर प्रसविनी वसुंधरा के लाड़लों को तो वीर, साहसी और बाँकुरा ही होना चाहिए।

इस निर्माण में आप बहुत अधिक सहयोग दे सकते हैं। निर्भीक प्रकृति के बालकों में भय की भावना पैदा कर देने का बहुत कुछ उत्तरदायित्व भी अभिभावकों का है। व्यक्तिगत सावधानी और समीपवर्ती वातावरण को शुद्ध रखकर अपने बच्चों को निर्भय प्रकृति का बना सकते हैं।

माता–पिता की अविश्वासी प्रकृति हमारी दृष्टि में मुख्य विकार है। उन्हें अपने बालकों पर विश्वास नहीं होता और वे छोटी–छोटी आशंकाओं को लेकर बालकों की क्रीड़ाओं में हस्तक्षेप करते रहते हैं। इसमें केवल परावलंबी हो जाने का दोष नहीं है वरन् बच्चे का अपनी ही शक्तियों के प्रति विश्वास उठने लगता है। वह अपने को दीन–दयनीय स्थिति वाला समझने लगता है, कायरता की मुख्य जड़ यही है। बच्चे की कुशलता की देखरेख तो रखिए, पर इतनी नहीं कि उसकी अपनी क्रियाशक्ति परावलंबी हो जाए। इसमें इतना ही संभव है कि बच्चा कहीं फिसल कर गिर पड़े और मामूली चोट आ जाए या उँगली में थोड़ा जल जाए। घर में और किसी खतरे की आशंका नहीं होती, यदि हो भी तो कारण दूर कर देना चाहिए, पर बच्चे के कार्यों में जितना कम संभव हो, हस्तक्षेप करना चाहिए। स्वानुभूतियाँ बालक का नैसर्गिक विकास करती हैं, प्रबुद्ध और निर्भय बनाती हैं।

अज्ञान और असत्य मूलक विश्वास से बच्चों को परिचित करा देना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बहुत बड़ी भूल है। मनुष्य का जैसा विश्वास होता है, वैसा ही उसके कार्यों का फल भी उसे मिलता है। यदि विश्वास सत्य, ज्ञान और प्रेममूलक होगा तो उससे विकास होगा, इसके विपरीत यदि विश्वास असत्य और अज्ञानपरक हुआ, तो वह घृणा और पतन की ओर ले जाएगा। बहुधा माताएँ बच्चों को चुप करने के लिए या भुलावे के लिए बाबाजी, सिपाही, हौवा, भूत, बुढ़िया, डायन, जू–जू आदि का भय दिखाती हैं। बेचारा बच्चा डरकर दुबक जाता है। माताएँ अपनी इस सफलता पर बहुत प्रसन्न होती हैं, पर उसका बुरा असर बच्चों के जीवन पर पड़ता है, वह सदा के लिए भीरु बन जाते हैं। उनमें अंधविश्वास की प्रकृति जोर पकड़ने लगती है, बालकों को कमजोर बनाने में इसका मुख्य हाथ है।

बच्चों के आगे डरावने दृश्यों का वर्णन या भावोत्पादक कहानियाँ नहीं सुनाना चाहिए। भूत–मसानों के किस्से और रोमांचकारी घटनाओं के चित्रण करना बड़ी भूल होगी। इस प्रकार की बातों से उसके प्रसुप्त मन में भयोत्पादक ग्रंथियाँ जम जाती हैं, जो बाद में अपना कार्य प्रारंभ कर बच्चों को डरपोक बना देती हैं।

प्रत्येक माता–पिता का यह कर्त्तव्य है कि यदि उन्हें ऐसा मालूम पड़े कि किसी बात को लेकर बच्चे के मस्तिष्क में भय पैदा हो रहा है, तो उसे तुरंत दूर कर दिया जाए, ताकि वैसी भावना मस्तिष्क में जड़ न जमा ले।

भय केवल डरावने, मनगढंत, भयोत्पादक कहानियाँ सुनने से ही नहीं पैदा होता है। कई बार लड़ाई–झगड़ों के कारण वातावरण में एक प्रकार का भयोत्पादक कंपन छा जाता है। इससे बच्चों के कोमल मस्तिष्क में आघात होता है और वे बहुत जल्दी डर जाते हैं। जोर–जोर से चिल्लाकर लड़ने, गालियाँ बकने, चीखने, मारपीट करने से जो डरावना वातावरण बनता है, उससे बच्चों को सदैव दूर रखना चाहिए।

यह सब इसलिए आवश्यक है कि बच्चे के मन में भय न पैदा हो और वह कायर एवं कमजोर न बने। इससे अधिक बच्चे के रचनात्मक विकास में सहयोग देने का महत्त्व है। बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से ही वीर–बाँकुरा बनाना चाहिए।

शकुंतला का भरत सिंहों के बच्चों के साथ खेला करता था। अब वैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संकल्प और आत्मबल न हो, तो भी साहसपूर्ण कहानियाँ बाल–निर्माण के रोचक संस्मरण तो सुनाए ही जा सकते हैं। छोटे–छोटे बच्चों के वीरता पूर्ण कार्यों की चर्चा करनी चाहिए। ऐसी कहानियाँ काल्पनिक भी हो सकती हैं, ऐतिहासिक भी, जिनसे बच्चे पर अनुकूल प्रभाव पड़े। ऐसी कथाएँ रात को लेटते समय या दिन में किसी भी अवकाश के समय बच्चों को सुनाना चाहिए।

कहानियों की तरह ही काव्य भी बच्चों को प्रिय होता है। उन्हें गाना सुनने–सुनाने का शौक होता है, पर लोगों की यह भूल होती है और वे दोषपूर्ण गीतों के द्वारा बच्चों के मस्तिष्क में विकार उत्पन्न कर देते हैं। यों बच्चों को ऐसी रचनाएँ सुनानी और याद करानी चाहिए, जिनसे उनकी भावनाओं में दृढ़ता, वीरता का आदर्श जाग्रत होता हो। बुद्धिमान स्त्रियाँ बच्चों को लोरियाँ गाकर सुलाती हैं, उन लोरियों में भय नहीं प्रेम, श्रद्धा और वीरता की बातें होती हैं। भूत आदि की अंधविश्वासमयी बातों से बालकों का मन कमजोर नहीं करतीं, इसलिए लोग वीर होते हैं। बालक के मन को भय, आतंक और विकारजन्य संस्कारों से बचाना नितांत आवश्यक है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org